



## !!आरती कुंजबिहारी की!!

आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
गले में बैजंती माला,  
बजावै मुरली मधुर बाला ।  
श्रवण में कुण्डल झलकाला,  
नंद के आनंद नंदलाला ।  
गगन सम अंग कांति काली,  
राधिका चमक रही आली ।  
लतन में ठाढ़े बनमाली भ्रमर सी अलक,  
कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक,  
ललित छवि श्यामा प्यारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥  
कनकमय मोर मुकुट बिलसै,  
देवता दरसन को तरसैं ।  
गगन सों सुमन रासि बरसै ।  
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,  
ग्वालिन संग,  
अतुल रति गोप कुमारी की,  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥

जहां ते प्रकट भई गंगा,  
सकल मन हारिणि श्री गंगा ।  
स्मरन ते होत मोह  
भंगा बसी शिव सीस,  
जटा के बीच, हरे अघ कीच,  
चरन छवि श्रीबनवारी की,  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥  
चमकती उज्ज्वल तट रेनू,  
बज रही वृंदावन बेनू ।  
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू  
हंसत मृदु मंद,  
चांदनी चंद,  
कटत भव फंद,  
टेर सुन दीन दुखारी की,  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥  
आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

<https://bhaktimargdarshan.com/>

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी ।  
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें ।

**Bhakti Margdarshan**

